**भारत की राष्ट्रपति**

**श्रीमती द्रौपदी मुर्मु**

**का**

**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में भारतीय वन सेवा परिवीक्षार्थियों के दीक्षांत समारोह में सम्बोधन**

**देहरादून: 24 अप्रैल, 2024**

मैं Indian Forest Service के 2022 बैच के सभी प्रशिक्षु अधिकारियों को बधाई देती हूँ। मुझे बताया गया है कि इस बैच में 10 महिला अधिकारी हैं। आप सभी महिला अधिकारियों को मैं विशेष बधाई देती हूँ क्योंकि आप समाज के प्रगतिशील बदलाव की प्रतीक हैं। मैं आशा करती हूँ कि आने वाले समय में महिला अधिकारियों की संख्या और भी बढ़ेगी।

देवियो और सज्जनो,

National Forest Academy की पर्यावरण के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पर्यावरण एवं जंगलों की महत्ता के बारे में पिछले सप्ताह उच्चतम न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण बात कही है and I quote "Human beings indulge themselves in selective amnesia when it comes to fathom the significance of forests… It's the spirit of the forest that moves the Earth." (Unquote)
जंगलों के महत्व को जान-बूझ कर भुलाने की गलती मानव समाज कर रहा है। हम यह भूलते जा रहे हैं कि वन हमारे लिए जीवन दाता हैं। यथार्थ यह है कि जंगलों ने ही धरती पर जीवन को बचा रखा है।

आपके पास जंगलों के संरक्षण, संवर्धन एवं पोषण की जिम्मेदारी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने इस अप्रतिम दायित्व के प्रति सजग और सचेत होंगे एवं पूर्ण निष्ठा से अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करेंगे।

देवियो और सज्जनो,

आज हम Anthropocene Age की बात करते हैं जो कि मानव केंद्रित विकास का कालखंड है। इस कालखंड में विकास के साथ-साथ विनाशकारी परिणाम सामने आए हैं। संसाधनों के un-sustainable दोहन ने मानवता को ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां विकास के मानकों का पुन: मूल्यांकन करना होगा। आज यह समझना बहुत जरूरी है कि हम पृथ्वी के संसाधनों के owner नहीं हैं बल्कि trustee हैं। हमारी प्राथमिकताएं मानव केंद्रित होने के साथ-साथ प्रकृति केंद्रित भी होनी चाहिएं। वस्तुतः प्रकृति केंद्रित हो कर ही हम सही अर्थों में मानव केंद्रित हो सकेंगे।

Climate Change की गंभीर चुनौती विश्व समुदाय के सामने है। Extreme Weather Conditions की अनेक घटनाएं हो रही हैं। अभी हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त होने के अधिकार को संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 के तहत मौलिक अधिकार का दर्जा दिया है।

प्रिय अधिकारियों,

आज यह सर्वविदित है कि पृथ्वी की जैव-विविधता एवं प्राकृतिक सुंदरता का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है जिसे हमें अति शीघ्र करना है। वन एवं वन्य जीवों के संरक्षण और संवर्धन के जरिए मानव जीवन को संकट से बचाया जा सकता है। इसलिए Indian Forest Service के अधिकारियों के दायित्व को मैं बहुत महत्वपूर्ण मानती हूँ।

आपकी सेवा के श्री पी. श्रीनिवास जी, श्री संजय कुमार सिंह जी, श्री एस. मणिकन्दन जी जैसे अधिकारियों ने Line of Duty में अपने प्राण न्योछावर

किए हैं। और भी ऐसे बहुत से अधिकारी आपकी सेवा ने देश को दिए हैं जिन्होंने पर्यावरण के लिए अतुलनीय कार्य किए हैं। उनकी चर्चा बहुत सम्मान से की जाती है। उन सभी को आप अपना Role Model एवं Mentor बनाएं एवं उनके दिखाए आदर्शों पर आगे बढ़ें।

देवियो और सज्जनो,

आज यहाँ वन अकादमी के experts उपस्थित हैं। मैं आप सबसे अनुरोध करूंगी कि जलवायु की इस आपातकालीन स्थिति को देखते हुए प्रशिक्षार्थियों के curriculum में यथोचित संशोधन करने पर विचार करें। विश्व के कई भागों में वन संसाधनों की क्षति बहुत तेजी से हुई है। वनों का विनाश किया जाना एक तरह से मानवता का विनाश करना है। Science and Technology की मदद से हम क्षति-पूर्ति तेज गति से कर सकते हैं। जैसे कई जगहों पर Miyawaki Method को अपनाया जा रहा है। Artificial Intelligence द्वारा संचालित उपकरण Afforestation के लिए उपयुक्त क्षेत्रों और Area Specific वृक्ष प्रजातियों की पहचान कर सकते हैं। ऐसे विभिन्न विकल्पों का आकलन करके भारत की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप समाधान विकसित करने की आवश्यकता है। इस दिशा में आप सब का योगदान महत्वपूर्ण होगा।

देवियो और सज्जनो,

विकास-रथ के दो पहिये होते हैं - परंपरा और आधुनिकता। आज मानव समाज पर्यावरण संबंधी कई समस्याओं का दंश झेल रहा है। इसके प्रमुख कारणों में एक है एक विशेष प्रकार की आधुनिकता, जिसके मूल में है प्रकृति का शोषण। इस प्रक्रिया में पारंपरिक ज्ञान को उपेक्षित किया जाता है। जनजातीय समाज ने प्रकृति के शाश्वत नियमों को अपने जीवन का आधार बनाया है। जनजातीय जीवन शैली मुख्यत: प्रकृति पर आधारित होती है। इस समाज के लोग प्रकृति का संरक्षण भी करते हैं।

असंतुलित आधुनिकता के आवेग में कुछ लोगों ने जनजातीय समुदाय और उनके ज्ञान-भण्डार को रूढ़िवादी मान लिया है। जलवायु परिवर्तन में जनजातीय समाज की भूमिका नहीं है लेकिन उन पर इसके दुष्प्रभाव का बोझ कुछ अधिक ही है।

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सदियों से जनजातीय समाज द्वारा संचित ज्ञान के महत्व को समझा जाए और पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए उसका उपयोग किया जाए। उनकी Collective Wisdom हमें ecologically sustainable, ethically desirable और socially justiciable मार्ग पर आगे बढ़ने में मदद कर सकती है। इसलिए अनेक भ्रामक धारणाओं को Un-learn करके जनजातीय समाज की संतुलित जीवन शैली के आदर्शों से Re-learn करना होगा। हमें Climate Justice की भावना के साथ आगे बढ़ना होगा। इसके साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जनजातीय समाज की भी विकास यात्रा में बराबर की भागीदारी हो।

प्रिय अधिकारियों,

मैं आप सभी से यह भी अनुरोध करना चाहूँगी कि जब आप अपने कार्यक्षेत्र में जाएँ तो वहाँ के जनजातीय लोगों के बीच समय बिताएं। उनका स्नेह एवं विश्वास अर्जित करें। वहाँ के समाज की Good Practices से सीखें और उनका प्रचार-प्रसार भी करें। आप अपने दायित्व की Ownership लें और Role Model बनें। उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता के मानकों में सुधार के लिए कार्य करें। आपका कार्य ऐसा हो जो उस क्षेत्र के बच्चों को Forest Services में आने के लिए प्रेरित करे।

देवियो और सज्जनो,

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति की वजह से लकड़ी और अन्य वन उत्पादों की मांग बढ़ी। बढ़ती मांग के कारण वनों के उपयोग के नए नियम-कानून और तरीके अपनाए गए। ऐसे नियम-कानूनों को लागू

करने के लिए Indian Forest Service की पूर्ववर्ती सेवा Imperial Forest Service का गठन किया गया था।

उस सेवा के लोगों का Mandate जनजातीय समाज तथा वन संपदा की रक्षा करना नहीं था। उनका Mandate भारत के Forest Resources का अधिक से अधिक दोहन करके ब्रिटिश राज के उद्देश्यों को बढ़ावा देना था; जंगलों पर साम्राज्यवादी नियंत्रण स्थापित करना था।

यह दुखदाई तथ्य है कि वर्ष 1875 से 1925 तक की 50 वर्ष की अवधि में अस्सी हजार से अधिक बाघों, डेढ़ लाख से अधिक तेंदुओं और दो लाख से अधिक भेड़ियों का शिकार, लोगों को प्रलोभन देकर कराया गया। मैं जब ऐसे museums में जाती हूँ जहां पशुओं की खाल या कटे सर को दीवारों पर सजाया गया है तो मुझे लगता है कि वे exhibits मानव सभ्यता के पतन की कहानी कह रहे हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि आज की Indian Forest Service के सभी अधिकारी पहले की Imperial Forest Service की औपनिवेशिक मानसिकता एवं दृष्टिकोण से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं। आपको भारत के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन ही नहीं करना है बल्कि परंपरा से संचित ज्ञान का मानवता के हित में उपयोग करना है। आपको आधुनिकता एवं परंपरा का समन्वय करके वन संपदा की रक्षा करनी है तथा वनों पर आधारित लोगों के हितों को आगे बढ़ाना है। ऐसा करके आप सही अर्थों में पर्यावरण-अनुकूल और समावेशी योगदान दे सकेंगे।

प्रिय अधिकारियों,

आप सभी एक कठिन परीक्षा को उत्तीर्ण करके यहाँ तक पहुंचे हैं। आपकी योग्यता सराहनीय है। लेकिन आपको यह याद रखना है कि आपकी असली परीक्षा अब शुरू होगी। आपके सामने कई Professional चुनौतियाँ आएंगी।

जब भी आप किसी दुविधा में हों, तब आप संविधान के मूल्यों और भारत के लोगों के हितों को ध्यान में रख कर फैसला लें।

मैं आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

धन्यवाद,

जय हिन्द!

जय भारत!